31.12.08

संस्तुति

हम संस्तुति करते हैं कि **श्री मालोजी अर्जुन जगताप** का एम्. फिल्. (हिंदी) का लघु शोध-प्रबंध **''हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन''** ('शह और मात', 'अंधेरे बंद कमरे', 'वे दिन', 'आपका बंटी' के विशेष संदर्भ में) परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

(प्रा. बी. डी. सगरे)
हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा।

DR. B. D. SAGARE
M.A., M.Phil., Ph.D.
Research Guide
Deptt. of Hindi
L.B.S. College, SATARA

(सुहास साळुंखे)
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा।

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 6/07/08

प्रा. डॉ. भरत धोंडिराम सगरे
एम्.ए., बी.एड्., एम्.फिल. पीएच्.डी.
अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री. मालोजी अर्जुन जगताप** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए **"हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन"** ('शह और मात', 'अंधेरे बंद कमरे', 'वे दिन', 'आपका बंटी' के विशेष संदर्भ में) शीर्षक से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं उनके शोध-कार्य से पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

शोध-निर्देशक

(प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे)

DR. B. D. SAGARE
M.A., M.Phil., Ph.D.
Research Guide
Deptt. of Hindi
L.B.S. College, SATARA

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 4/07/08

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि **''हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन''** ('शह और मात', 'अंधेरे बंद कमरे', 'वे दिन', 'आपका बंटी' के विशेष संदर्भ में) यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लघु शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना ~~इससे~~ पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्र

4/07/08

(श्री. मालोजी अर्जुन जगताप)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 4/07/08

प्राक्कथन

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

प्राक्कथन

स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् अनुसंधान के प्रति मेरी रुचि और जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी। स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययन करते समय उपन्यास साहित्य के अंतर्गत अनेक श्रेष्ठ उपन्यास पढ़ने का मौका मिला। पढ़ाई के दौरान आधुनिक हिंदी उपन्यासों की विषयवस्तु ने मेरे मस्तिष्क को झकझोर डाला। आधुनिक समाज जीवन में व्यक्ति के अंतसंघर्ष के साथ उस पर पड़नेवाले आधुनिक मूल्यों के प्रभाव को आज के उपन्यासों में यथातथ्य अंकित किया जा रहा है। आज के उपन्यासों की विषयवस्तु का प्रमुख आधार है- 'मध्यवर्ग'। आधुनिक उपन्यासों में मध्यमवर्गीय रचनाकारों ने मध्यवर्गीय जीवन का बड़ा ही संवेदनशील और वास्तविक चित्रण किया है। आधुनिक समाज में घटते मानवी मूल्यों, नगरों मे संघर्षपूर्ण जीवन जीनेवाला शिक्षित वर्ग तथा उनकी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं का चित्रण आज के उपन्यासों में दिखाई देता है।

आधुनिक समाज का विचार करते समय मध्यवर्ग सबसे अधिक संघर्षपूर्ण दिखाई देता है। इस वर्ग के संदर्भ में अनेक प्रश्न हमारे सामने खड़े हैं। आज के समय में जीवन की आवश्यकताएँ मध्यवर्ग पूरा कर पाएगा ? युवा वर्ग की दीशाहीनता, अनिर्णय की स्थिति, अकेलापन, अलबोध के कारण यह वर्ग समाज में अपना स्थान स्थिर कर पाएगा ? आज के विषम परिवेश में यह वर्ग समाज को स्वस्थ दृष्टिकोण देने में कामयाब होगा या नहीं ? ऐसे अनेक सवालों ने इस मध्यवर्गीय जीवन के प्रति मुझे आकृष्ट किया। 'मध्यवर्ग और हिंदी उपन्यास' को लेकर मैंने अध्ययन शुरू किया और अंत में यह विषय लेकर मैं गुरुवर्य डॉ. भरत धोंडिराम सगरे जी के पास पहुँचा और उनके विचार-विमर्श करके मैंने 'हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन'' यह विषय शोध-अध्ययन के लिए निश्चित किया।

❑ शोध-विषय का महत्त्व -

आज का हिंदी उपन्यास समाज जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज है। हिंदी उपन्यासकारों ने बदलते सामाजिक परिवेश का यथार्थ अंकन किया है। भारतीय समाज विभिन्न

वर्गों में विभाजित है और उसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी अलग-अलग है, फिर भी उनमें एकता दिखाई देती है। आधुनक हिंदी उपन्यासकरों ने इस दृष्टि से मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण किया है। इसी वजह से आज के हिंदी साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन अनुसंधान का विषय बना हुआ है। परिणामतः उसका महत्त्व है।

आज के मध्यवर्गीय समाज व्यवस्था की गतिमानता एवं बदलती मानसिकता के कारण मध्यवर्गीय पारिवारिक एवं दांपत्य जीवन विघटन के दौर से गुजर रहा है। मध्यवर्गीय युवा विद्रोही बन रहा है तो युवतियाँ संघर्ष कर रही हैं। मध्यवर्ग पर पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता का सबसे अधिक प्रभाव पड़ रहा है। इन सभी बातों का चित्रण आज के हिंदी उपन्यासों में हो रहा है, इसी कारण इस का महत्त्व है। भारतीय समाज की नींव मध्यवर्ग है। साहित्य में इस वर्ग का प्रभावी अंकन होने के कारण उस पर सोचना, चिंतन करना अनिवार्य है। इस दृष्टि से हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय यह विषय महत्त्वपूर्ण रहा है। वास्तविक जीवन का अध्ययन करने के लिए उपन्यास सहाय्यक रहे हैं। अतः यह विषय महत्त्व का रहा है।

☐ शोध-विषय का उद्देश्य -

आज के साहित्यकार समाज जीवन के चित्रण के साथ-साथ सामाजिक जागरण का भी कार्य कर रहे हैं। बदलते सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं, मापदंडों का चित्रण करके नए समाज व्यवस्था की स्थिति एवं गति को चित्रित करना तथा हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि, उनकी समस्याएँ, नारी जीवन आदि पर प्रकाश डालना इस लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य है।

पाश्चात्य संस्कृति एवं विचारधाराओं का, होटल संस्कृति, संवाद एवं प्रसार माध्यमों का प्रभाव मध्यवर्ग पर किस तरह से हुआ है ? उस पर सोचना लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में औद्योगिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में क्रांति हो गई, जिसके फलस्वरूप समाज का पुराना ढाँचा चरमरा गया, समाज में एक जागृति निर्माण हुई इन सभी घटनाओं से मध्यवर्ग कितना प्रभावित है ? हिंदी उपन्यास में इस प्रभावित एवं बदले मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण किस प्रकार हुआ है इसका अध्ययन करना इस लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य है।

❑ संपन्न अनुसंधान कार्य -

मेरी जानकारी के अनुसार अब तक इस विचारधारा को लेकर किया गया अनुसंधान इस प्रकार है -

1. हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग - निर्मम हेमराज
2. मध्यवर्गीय चेतना और हिंदी उपन्यास - भूपसिंह भूपेंद्र
3. राजेंद्र यादव के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन - अर्जुन चव्हाण
4. गोपाल राय के कथा-साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन - सुधा सिंह

प्रस्तुत शोध-कार्य का आरंभ करने से पहले मेरे मन में जिज्ञासा के रूप में कई सवाल उत्पन्न हो गए जो इस प्रकार हैं -

1. मध्यवर्ग की संकल्पना क्या है ?
2. मध्यवर्ग की सामाजिक और सांस्कृतिक, आर्थिक स्थिति क्या है ?
3. आज के मध्यवर्गीय जीवन पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव कितना है ?
4. हिंदी उपन्यासकारों ने मध्यवर्गीय समाज जीवन का कितना सफल चित्रण किया है ?
5. आज के विसंगत परिस्थितियों में मध्यवर्ग समाज को स्वस्थ्य दृष्टिकोण दे सकेगा ?
6. मध्यवर्गीय समाज में नारी की स्थिति क्या है ?
7. मध्यवर्ग में पनप रही होटल संस्कृति के कौन से दुष्परिणाम हो सकते हैं ?
8. मध्यवर्गीय समाज को किन-किन समस्याओं से जूझना पड़ता है ?
9. मध्यवर्गीय समाज के समस्याओं को सुलझाने के लिए कौनसे उपाय किए जा सकते हैं ?
10. क्या हिंदी उपन्यासकारों ने इसके बारे में कोई निर्देश दिया है ?

आदि प्रश्नों के आधार पर विवेच्य उपन्यासों का अध्ययन किया जाएगा।

❑ शोध-विषय की व्याप्ति एवं सीमा -

वस्तुतः शोध गहन अध्ययन का विषय है- जिसमें परिश्रम के साथ-साथ सुनियोजन की आवश्यकता होती है, तात्पर्य हर शोध-विषय की अपनी समय सीमा एवं व्याप्ति निर्धारित होती है और होनी चाहिए तभी शोध-कार्य सुचारू रूप से संपन्न होता है। प्रस्तुत अध्ययनार्थ विषय

बहुत ही गहन एवं विस्तृत है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विषय का विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया है वे इस प्रकार -

प्रथम अध्याय - ''मध्यवर्ग और हिंदी उपन्यास''

किसी भी विचारधारा का अध्ययन करते समय उसके सैद्धांतिक तत्वों का आकलन करना आवश्यक होता है। इसलिए इस अध्याय में 'समाज की परिभाषा एवं स्वरूप', 'समाज का वर्गीकरण', 'मध्यवर्ग स्वरूप एवं परिभाषा', 'भारत में मध्यवर्ग का उद्भव और विकास', 'हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग' इसमें आरंभ से लेकर आज तक के हिंदी उपन्यासों पर प्रकाश डाला गया है। विवेच्य विषयों का गहराई से विवेचन एवं विश्लेषण करने के उपरांत प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया है। यह निष्कर्ष उन बिंदुओं को स्पष्ट करते हैं, जिसके आधार पर आगे के अध्यायों की रचना कर विवेच्य विषय का विश्लेषण किया गया है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों का कथ्य''

इस अध्याय के अंतर्गत कथ्य की परिभाषा, स्वरूप एवं उसके महत्त्व को स्पष्ट कर राजेंद्र यादव का 'शह और मात', मोहन राकेश का 'अंधेरे बंद कमरे', निर्मल वर्मा का 'वे दिन' और मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी इन चार उपन्यासों की कथावस्तु को समीक्षात्मक दृष्टिकोण रखते हुए प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

तृतीय अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप''

इस अध्याय में 'शह और मात', 'अंधेरे बंद कमरे', 'वे दिन', 'आपका बंटी' इन चार उपन्यासों में किस प्रकार के मध्यवर्ग का चित्रण किया है तथा उनके जीवन के स्वरूप का भी विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया गया है।

चतुर्थ अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष''

इस अध्याय के अंतर्गत विवेच्य उपन्यासों को आधार बनाकर मध्यवर्ग के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष का विवेचन किया गया है। सामाजिक पक्ष के अंतर्गत विवाह,

परिवार एवं दांपत्य जीवन, नारी जीवन, उच्चवर्ग के प्रति आकर्षण, रीति-रीवाज, रूढ़ि-परंपरा की जड़ता, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति, अनैतिक संबंध आदि विषयों पर तो सांस्कृतिक पक्ष के अंतर्गत विवाह की नई रीतियाँ, अर्थप्रधान संस्कृति का उदय, वेशभूषा, मनोरंजन, होटल संस्कृतिक, ईश्वर में अनास्था, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की समस्याएँ''

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य उपन्यासों को आधार बनाकर मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण किया है। इन समस्याओं के अंतर्गत 'परिवार एवं टूटते दांपत्य जीवन की समस्या, अकेलेपन की समस्या, दुर्बल मानसिकता एवं अंतर्द्वंद्व की समस्या, अहं की समस्या, हीनता एवं घृणा की समस्या, प्रेम की समस्या में दिखावटी प्रेम एवं असफल प्रेम की समस्या, विवाह की समस्या में विवाह एक निरर्थक बंधन एवं विवाह विच्छेद या तलाक की समस्या, नारी जीवन की समस्या के अंतर्गत स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करने एवं नारी अत्याचार या शोषण की समस्या, अनैतिक संबंधों की समस्या, अर्थाभाव की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, युद्ध की समस्या, नशापान की समस्या आदि समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण उद्हरणों को आधार बनाकर किया है। अंत में प्राप्त यथातथ्य निष्कर्ष में दिए गए हैं।

☐ उपसंहार -

प्रबंध के अंत में विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पद्धति से निकाल गए समन्वित निष्कर्षों को उपसंहार में दिया गया है। अंत में अधार ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है।

☐ शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. हिंदी के प्रमुख हस्ताक्षरों में से राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा और मन्नू भंडारी के उपन्यास 'शह और मात', 'अंधेरे बंद कमरे', 'वे दिन', 'आपका बंटी' को केंद्र में रखकर मध्यवर्गीय विचारधारा के अनुरूप अध्ययन किया गया है। यह लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता रखता है।

2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में मध्यवर्गीय समाज के सामाजिक पक्ष और सांस्कृतिक पक्ष का चित्रण कर मध्यवर्गीय परिवर्तीत दृष्टिकोण एवं जीवन पद्धति का चित्रण वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया है।
3. मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं का सूक्ष्मता से अंकन कर उसके परिणामों की ओर भी संकेत इस लघु शोध-प्रबंध में किया है।
4. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा और मन्नू भंडारी के सामाजिक, सांस्कृतिक विचारों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले हितैषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आद्‌य कर्तव्य समझता हूँ।

श्रद्‌धेय गुरुवर्य **डॉ. भरत धोंडीराम सगरे**, अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्‌यालय, सातारा के चिंतनशील, शोधपरक एवं पांडित्यपूर्ण निर्देशन में मुझे शोध-कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। निरंतर अध्ययन-अनुसंधान, अध्यापन एवं चिंतन में व्यस्त रहने के बावजूद भी आपने अपना बहुमूल्य समय देकर मेरे शोध-कार्य को संपन्न बनाने में सहर्ष एव सक्रिय सहयोग दिया है। आपने मुझे शोध-कार्य, शोध-विषय एवं शोध की भाषा को लेकर कई बातों का ज्ञान दिया है। आपके इस कर्तव्य के प्रति मैं धन्यवाद देता हूँ। आपके प्रति शब्दों में कृतज्ञता ज्ञापित करना असंभव है, मैं आपके ऋण में रहना ही पसंद करूँगा।

लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री. सुहास साळुंखे सर जी ने मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया। अतः उनका आभारी हूँ।

हिंदी विभागाध्यक्ष शिवाजी विश्वविद्‌यालय, कोल्हापुर के गुरुवर्य डॉ. **अर्जुन चव्हाण** सर जी का मैं आभारी हूँ। उन्होंने मुझे अपने व्यक्तिगत व्यस्तता से समय देकर मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया। साथ-साथ हिंदी विभाग के गुरुवर्य **डॉ. पांडुरंग पाटील सर, डॉ. पद्‌मा पाटील मॅडम, डॉ. शोभा निंबालकर** ने भी मुझे मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ।

शुरू से जिन्होंने मुझे प्रेरणा दी और मार्गदर्शन किया वे विज्ञान महाविद्‌यालय, सांगोला के अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख गुरुवर्य **संभाजी शिंदे** सर तथा हिंदी विभाग के काकासाहेब घाडगे सर, कसबे सर के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

आदरणीय एवं श्रद्‌धेय, परमात्मा स्वरूप मेरे पिता **अर्जुन** और माता **मंगल**, बड़े भाई **तानाजी** एवं भाभी **संगीता**, छोटे भाई **डॉ. धनाजी** इन सभी के अनवरत परिश्रम, स्नेह और आशीर्वाद से मैं आज तक की शिक्षा एवं अनुसंधान कार्य पूरा कर सका हूँ। मैं सदैव उनके ऋणों में रहना पसंद करूँगा। साथ-साथ मेरी भतीजी **स्नेहल** और भतीजा **युवराज** का स्नेह भी मिला।

मेरे शुभकांक्षी और मेरे मित्र **सतीश रूपनर, शरद पवार, मनोज खंडागले, राहुल पाटील, वालचंद नागरगोजे, नवनाथ पाटील, आबा काशीद, प्रकाश मुंज, दिपक तुपे, राजेंद्र धायगुडे, रमजान मुजावर, अर्जुन लाखे, रमेश शिंदे, अभीजीत पाटील, दत्ता येलपले, चंदू कोलवले, वामन सरगर, निलेश शेलके, अक्षय पालमपल्ली, राज पाटील, संजय नवले, चांगदेव बंडगर, संतोष बंडगर, झाकीर काझी, सचिन यादव, राजाराम पाटील, जयसिंग चवरे, तानाजी हावलदार** तथा एम्. फिल. की सहेलियाँ **वैशाली कुंभार, सीमा पाटील, मोनिका कदम, पुनम देशपांडे** का भी इस लघु शोध-प्रबंध कार्य की पूर्ति के लिए महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। अतः इन सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बॅरिस्टर बालासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर से हुई। इस ग्रंथालय के कर्मचारी श्री. गणेश नेर्लेकर, कवटे सर, खामकर सर, जाधव सर, दिंडे सर, रसाल सर, संजय महाजन सर तथा पाटील मॅडम का महत्त्वपूर्ण सहयोग मिला। अतः इन सब का ऋणी हूँ। लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, सातारा के ग्रंथालय के कर्मचारियों का मैं आभारी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध के संगणक-टंकण का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य **अल्ताफ मोमीन** कोल्हापुर ने सुचारू रूप से तथा तत्परता से करके शोध-प्रबंध प्रस्तुति के लिए उचित योगदान दिया है। अतः मैं उनके प्रति विशेष अभारी हूँ।

अंत में जिन्होंने इस शोध-कार्य को संपन्न बनाने के लिए प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग किया है, मैं उन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को विद्वतजनों के सम्मुख विनम्रतापूर्वक परीक्षण हेतु प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(श्री. मालोजी अर्जुन जगताप)

स्थल :- कोल्हापुर।
तिथि :-

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - ''मध्यवर्ग और हिंदी उपन्यास'' पृ. 1 - 23

प्रस्तावना

1.1 समाज परिभाषा एवं स्वरूप

1.2 वर्गविभाजन या समाज का वर्गीकरण

1.2.1 उच्चवर्ग

1.2.2 मध्यवर्ग

1.2.3 निम्नवर्ग

1.3 मध्यवर्ग परिभाषा एवं स्वरूप

1.4 भारत में मध्यवर्ग का उद्‌भव और विकास

1.5 हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग

1.5.1 प्रेमचंद पूर्ववर्ती हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग

1.5.2 प्रेमचंद कालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग

1.5.3 प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग

निष्कर्ष

द्‌वितीय अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों का कथ्य, स्वरूप एवं परिभाषा'' पृ. 24 - 58

2.1 राजेंद्र यादव - 'शह और मात' (1959)

2.2 मोहन राकेश - 'अंधेरे बंद कमरे' (1961)

2.3 निर्मल वर्मा - 'वे दिन' (1964)

2.4 मन्नू भंडारी - 'आपका बंटी' (1971)

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप'' पृ. 59 - 80

प्रस्तावना

3.1 राजेंद्र यादव के 'शह और मात' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप

3.2 मोहन राकेश के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप

3.3 निर्मल वर्मा के 'वे दिन' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप

3.4 मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष'' पृ. 81 - 118

प्रस्तावना

4.1 सामाजिक पक्ष

4.1.1 विवाह

4.1.2 परिवार एवं दांपत्य जीवन

4.1.3 नारी जीवन

4.1.4 उच्चवर्ग एवं पाश्चात्य सभ्यता के प्रति आकर्षण

4.1.5 रीति-रिवाज, रूढ़ि परंपरा की जड़ता

4.1.6 आर्थिक स्थिति

4.1.7 शैक्षिक स्थिति

4.1.8 अनैतिक संबंध

4.2 सांस्कृतिक पक्ष

4.2.1 विवाह की नई रीतियाँ

4.2.2 अर्थप्रधान संस्कृति का उदय
4.2.3 वेशभूषा
4.2.4 मनोरंजन के साधन
4.2.5 होटल संस्कृति
4.2.6 ईश्वर में अनास्था
निष्कर्ष

पंचम अध्याय - "आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की समस्याएँ" **पृ. 119 - 164**

प्रस्तावना
5.1 परिवार एवं टूटते दांपत्य जीवन की समस्या
5.2 अकेलेपन की समस्या
5.3 दुर्बल मानसिकता एवं अंतर्द्वंद्व की समस्या
5.4 अहं की समस्या
5.5 हीनता एवं घृणा की समस्या
5.6 प्रेम की समस्या
5.6.1 असफल प्रेम की समस्या
5.6.2 दिखावटी प्रेम की समस्या
5.7 विवाह की समस्या
5.7.1 विवाह एक निरर्थक बंधन
5.7.2 विवाह विच्छेद या तलाक की समस्या
5.8 नारी जीवन की समस्या
5.8.1 स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करने की समस्या
5.8.2 नारी अत्याचार या शोषण की समस्या
5.9 अनैतिक संबंधों की समस्या

5.10 यौन-संबंध की समस्या

5.11 अर्थाभाव की समस्या

5.12 बेरोजगारी की समस्या

5.13 युद्‌ध की समस्या

5.14 नशापान की समस्या

5.15 उपेक्षित बालक की समस्या

निष्कर्ष

उपसंहार पृ. 165 - 175

संदर्भ ग्रंथ सूची पृ. 176 - 180